

CLASS : 12th (Sr. Secondary)

Code No. 1249

Series : SS/Annual Exam.-2024

रोल नं०

--	--	--	--	--	--	--	--

उत्तर मध्यमा सह वरिष्ठ माध्यमिक परीक्षा संस्कृत साहित्य वेद सिद्धान्त (आर्ष पञ्चति गुरुकुल)

Sub Code : 1201/SKS

(Only for Fresh/Re-appear/Improvement/Additional Candidates)

समय : 3 घण्टे]

[पूर्णांक : 80

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 तथा प्रश्न 9 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिये गये कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख्य-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- उत्तर-पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/पन्ने न छोड़ें।
- उत्तर-पुस्तिका के अतिरिक्त कोई अन्य शीट नहीं मिलेगी। अतः आवश्यकतानुसार ही लिखें और लिखा उत्तर न काटें।
- परीक्षार्थी अपना रोल नं० प्रश्न-पत्र पर अवश्य लिखें। रोल नं० के अतिरिक्त प्रश्न-पत्र पर अन्य कुछ भी न लिखें और वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तरों पर किसी प्रकार का निशान न लगाएँ।
- कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि प्रश्न-पत्र पूर्ण व सही है, परीक्षा के उपरान्त इस सम्बन्ध में कोई भी दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा।

निर्देश :- (क) सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

- (ख) प्रत्येक खण्डम् अधिकृत्य उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने, कमेण लेखनीयानि।
- (ग) प्रश्न संख्या प्रश्नपत्रानुसारम् अवश्यमेव लेखनीया।
- (घ) श्रेष्ठाङ्गान् प्राप्तये सुस्पष्टः लेखः लेखनीयः।

खण्डः – ‘क’

(बहुविकल्पीयप्रश्नाः)

1. निम्नाङ्कितानां किमयेकं समुचितमुत्तरं लिखत –

$1 \times 16 = 16$

(i) “देवी द्यावापृथिनी०” मन्त्रस्यास्य कः स्वरः ?

- | | |
|------------|-----------|
| (क) मध्यमः | (ख) षड्जः |
| (ग) पञ्चमः | (घ) धैवतः |

(ii) “गर्भो देवानां पिता” मन्त्रस्यास्य कः विषयः ?

- | | |
|------------------|----------------------|
| (क) यज्ञविषयः | (ख) ईश्वरोपासनाविषयः |
| (ग) अध्यापकविषयः | (घ) आत्माविषयः |

(iii) “समग्निरग्निना०” मन्त्रेऽस्मिन् का देवता ?

- | | |
|--------------|-------------|
| (क) विद्वान् | (ख) इन्द्रः |
| (ग) अग्निः | (घ) ईश्वरः |

(iv) ‘आकूतिः’ इति पदस्य कोऽर्थः ?

- | | |
|-------------|-------------|
| (क) उत्साहः | (ख) धैर्यम् |
| (ग) साहसम् | (घ) बलम् |

(3)

(v) किं लिङ्गं जीवस्य नास्ति ?

- | | |
|---------------|------------|
| (क) प्रयत्नम् | (ख) सुखम् |
| (ग) ऐश्वर्यम् | (घ) दुःखम् |

(vi) कियन्तो वसवः ?

- | | |
|----------|--------|
| (क) सप्त | (ख) नव |
| (ग) अष्ट | (घ) दश |

(vii) ईश्वरः कीदृशोऽस्ति ?

- | | |
|-----------|------------|
| (क) सादिः | (ख) सान्तः |
| (ग) आदिः | (घ) अनादिः |

(viii) परमात्मा कीदृशो नास्ति ?

- | | |
|-------------|-------------|
| (क) रागवान् | (ख) कोऽपिन |
| (ग) विरक्तः | (घ) संरक्तः |

(ix) सांख्यानां निष्ठा केन भवति ?

- | | |
|----------------|-------------------|
| (क) आत्मयोगेन | (ख) कर्मयोगेन |
| (ग) ज्ञानयोगेन | (घ) सन्न्यासयोगेन |

(x) इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा स उच्यते।

- | | |
|---------------|----------------|
| (क) सदाचारः | (ख) मिथ्याचारः |
| (ग) सत्याचारः | (घ) पापाचारः |

(xi) यज्ञात् कः भवति ?

- | | |
|--------------|-----------|
| (क) पर्जन्यः | (ख) मेघः |
| (ग) वृक्षः | (घ) वायुः |

(4)

(xii) आत्मन्येवात्मना तुष्टः कः ?

- | | |
|------------------|------------------|
| (क) विगतस्पृहः | (ख) वीतरागभयः |
| (ग) स्थितप्रज्ञः | (घ) वीतरागक्रोधः |

(xiii) लक्ष्मीः केन पदेन सम्बोध्यते ?

- | | |
|-------------|---------------|
| (क) अनार्या | (ख) श्रीः |
| (ग) भूतिः | (घ) सम्पत्तिः |

(xiv) विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना का ?

- | | |
|--------------|-----------|
| (क) पार्वती | (ख) भारती |
| (ग) लक्ष्मीः | (घ) उमा |

(xv) कीदृशः लक्ष्मीमदः ?

- | | |
|----------------|------------------|
| (क) विवेकोपशमः | (ख) अविवेकोपशमः |
| (ग) रूपकम् | (घ) अपरिणामोपशमः |

(xvi) “शूरं कण्टकमिव परिहरति” अत्र कः अलंकारः ?

- | | |
|------------|-----------------|
| (क) उपमा | (ख) उत्प्रेक्षा |
| (ग) रूपकम् | (घ) श्लेषः |

खण्डः – ‘ख’**(अतिलघूत्तरीयाः प्रश्नाः)****2.** अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि विधेहि – $2 \times 7 = 14$

- (क) ईश्वरस्योपासनायाः किं फलम् ?
 (ख) प्रत्यक्षप्रमाणस्य लक्षणं किम् ?

(5)

- (ग) के रुद्राः, कियत्संख्यकाः, कस्माच्च ते रुद्राः ?
- (घ) वेदाः नित्या अनित्याः वा ?
- (ङ) 'अहं ब्रह्मास्मि' कोऽर्थोऽस्य दयानन्दमतेन ?
- (च) परमेश्वरः व्यापकः आहोस्विद्वेशविशेषेऽवतिष्ठते, स्पष्टयत।
- (छ) यज्ञः कथं प्रजापतिः ?

3. मन्त्रपूर्ति कुरुत -

 $2 \times 3 = 6$

- (क) युज्जते मन उत युज्जते०
- (ख) अहः केतुना जुषताम्०
- (ग) मनसः काममाकूतिम्०

खण्डः – ‘ग’

(लघूत्तरीयाः प्रश्नाः)

4. अधोलिखितयोः मन्त्रयोः सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या -

 $4 \times 2 = 8$

- (क) स्वाहा मरुद्धिः परि श्रीयस्व दिवः संस्पृशस्पाहि।
मधु मधु मधु॥।
- (ख) स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाऽग्नये स्वाहाऽन्तरिक्षाय
स्वाहा वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा।

5. पद्यत्रयं सप्रसङ्गं व्याख्याहि -

 $4 \times 3 = 12$

(क) विषया विनिवर्तने निराहारस्य देहिनः।

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते॥

(ख) ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।

तत्किं कर्मणि धोरे मां नियोजयसि केशव॥

(ग) यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुञ्चन्ते सर्वकिलिप्तैः।

भुज्जते ते त्वधं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

खण्डः – ‘घ’

(निबन्धात्मक-प्रश्नाः)

6. गद्यांशस्य सप्रसङ्गं व्याख्या विधेया -

 $6 \times 1 = 6$

गुरुपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादिवैस्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरुकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योतिरालोक, नोद्वेगकरः प्रजागरः।

अथवा

इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। नाशयति च दिङ्मोह इवो-न्मार्गप्रवर्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु।

7. कस्यायेकस्य चरित्रचित्रणं कुरुत -

 $6 \times 1 = 6$

शुकनासः अथवा लक्ष्मीः

(7)

1249

8. संस्कृतभाषयाऽनूद्यताम् -

$1 \times 6 = 6$

- (क) देवदत्त वृक्षों को जल से सींचता है।
- (ख) विद्या से धर्म तथा धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।
- (ग) विश्व के कण-कण में ईश्वर बसते हैं।
- (घ) निर्धन को भोजन देना चाहिए।
- (ङ) वह कल घर जाएगा।
- (च) देवदत्त धोबी को कपड़े देता है।

9. विषयमेकमाधृत्य निबन्धं लिखत -

$6 \times 1 = 6$

विद्या अथवा वेदः

